अध्याय 6

उपसंहार

अध्याय - 6

उपसंहार

अध्ययन के निष्कर्ष, उपलब्धियाँ और सम्भावनाएँ

अब तक हम शैलेश मटियानीजी के उपन्यासों में चित्रित निम्नवर्ग का अध्ययन कर चुके हैं। इस अध्ययन के उपरान्त कुछ निष्कर्ष एवं उपलब्धियाँ सामने आयी है। उनको यहाँ उद्धृत करना वांछनीय होगा।

साहित्य में समाज का स्पदंन बोलता है, तथा साहित्य की विषय वस्तु समाज से प्रभावित होती है। शैलेश मटियानीजी का उपन्यास साहित्य भी समाज का स्पंदन है। महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह निम्नवर्गीय समाज का वास्तविक स्पंदन है। शैलेश मटियानी मूलतः आंचलिक उपन्यासकार होने के कारण सामाजिक यथार्थ का उनके उपन्यासों में निर्वाह हो चुका है। निम्नवर्गीय जन-जीवन की विभिन्न परम्पराओं रीति-रिवाजों, विश्वासों आदि का वर्णन उसमें हुआ ही है, साथ ही साथ उनके विभिन्न समस्याओं का उद्घाटन भी हुआ है। वस्तुतः सामाजिक यथार्थ में केवल आर्थिक विषमता, शोषण की प्रवृत्ति एवं विद्रोह की भावना का वर्णन किया जाता है मगर मटियानीजी ने अपने उपन्यासों में स्त्रियों और मजदूरों की गिरी हुई आस्था समाज के विभिन्न स्तरों को छोड़कर केवल निम्नवर्गीय लोगों को सामने रखते हुए सही चित्रण किया है। लेखक ने व्यक्ति की अपेक्षा समाज चित्रण को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। उपन्यास के पात्र समाज का ही प्रतिनिधित्व करते हैं।

हिन्दी साहित्य में निम्नवर्गीय जीवन को इतनी निकट से सर्वप्रथम शैलेश मटियानीजी ने देखा, परखा, अनुभव किया और उसे अपने उपन्यासों में व्यक्त भी किया है। लेखक ने गरीबों की विवशता को करूणा जन्य स्थिति से बाहर निकालकर एक आदर्श काल्पनिक स्थिति के निर्माण की बात को टालकर उसे सही संदर्भो में, वास्तविक रूप में तथा संघर्ष स्थिति में रखने का महत्वपूर्ण काम किया है। अपने इर्द-गिर्द का जों का त्यों चित्रण करके उनके मूलभूत प्रश्नों को प्रस्तुत किया है। मटियानीजी को अपने परिवेश में जो कुछ दिखाई दिया उसे बिना कोई साहित्यिक पुट चढ़ाकर, उसे एक नया स्वर दिया है। यह स्वर स्वतः पूर्ण, सहज अकृत्रिम और मानवीय है। निम्नवर्ग जो प्रायः सर्वहारा वर्ग हैं, अपने पेट के लिये कोई भी काम करने से हिचकिचाता नहीं। खून-मारामारी, लूट-खसूट, चोरी, छिना-झपटी से लेकर तन के व्यापार तक

मानवीय संस्कृति से हटकर यह काम करते समय उसके मन में किसी प्रकार का संकोच निर्माण नही होता। इसका एक मात्र एकमात्र कारण यह है कि वह अपने अस्तित्व को बनाया रखना चाहता है जिसके लिये असभ्य तथा श्लाघ्य काम करने में वह पिछे रहता नही। पुरूष प्रधान संस्कृति में पुरूष पैसे की प्राप्ति के लिये स्त्री को वेश्या व्यवसाय में लगा देता है। इस स्थिति को लेखक ने नारी की असहाय्यता तथा पुरूषों की शिरजोरी का प्रमाण माना हैं।

नारी को लेकर पाप-पुण्य, नीति-अनीति, पवित्र-अपवित्र आदि की बात को लेखक ने झुठला दिया हैं। नारी के पापी होने में लेखक का विश्वास नही है। लेखक के उपन्यासों में इस बात की चर्चा करते समय गंदगी और अश्लिलता मेहसूस हो सकती हैं किंतु अगर साहित्य जीवन की प्रतिक्रिया है तो समाज के इस महत्वपूर्ण अंग को गंदा, अश्लिल कहकर छोडा नही जा सकता। इस प्रकार का आग्रही प्रतिपादन उन्होंने किया है। निम्नवर्ग के यथार्थ एवं बदसूरत पक्ष को सामने रखना लेखक का प्रमुख उद्देश्य रहा है। इसमें अभिव्यक्त जीवन की सारी विसंगतीयाँ और विद्रूपताएँ हमारे मन-मानस को झकझोर देती है।

मटियानीजी के उपन्यासो में चित्रित निम्नवर्ग सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध एवं पुरातन के साथ आधुनिक भी हैं। पहाडी प्रदेश के निम्नवर्ग में परम्परागत सांस्कृतिक मूल्यों के विघटन की प्रक्रिया बड़ी तीव्र गति से बढ़ रही हैं, शहरों के सम्पर्क में आ जाने के कारण यह परिवर्तन दिखाई दे रहा है। मटियानीजी ने पहाडी एवं नागरी निम्नवर्ग की सांस्कृतिक विपुलता को पूर्ण आत्मियता के साथ अपने उपन्यास साहित्य में चित्रित किया है। उनके उपन्यासो में विविध नगरांचलो एवं ग्रामांचलों के सामाजिक जीवन का विस्तार से चित्रण है तथा उनमें व्याप्त विसंगतियों, विषमताओं, अंधविश्वासों और रूढियों की मुक्ति की दिशा में जन मानस की छटपटाहट और नवीन सामाजिक चेतना के संकेत उपलब्ध होते हैं। लेखक का यह भाव उनके 'चौथी मुठ्ठी', 'हौलदार', 'कबुतरखाना' और 'बोरीवली से बोरीबंदर तक' उपन्यासो में सहज दृष्टिगत होता हैं।

मटियानीजी के उपन्यासो में चित्रित निम्नवर्ग का धार्मिक जीवन अंधविश्वासों, शकुन-अपशकुन, पाप-पुण्य के साथ-साथ साम्प्रदायिकता तथा धर्म के कर्मकाण्डों में जकडा हुआ है। इनके जीवन में धर्म की स्थिति एक शक्ति के रूप में हैं। निम्नवर्गीय समाज में जन्म से लेकर मृत्यु तक किसी न किसी रूप में धार्मिक संस्कार महत्व रखते हैं। यह वर्ग पूर्णतः धर्म भीरू हैं। यही कारण है कि शहरों में बसा हुआ निम्नवर्ग भी इनका पूर्णतः पालन करता हैं। निम्नवर्गीय लोग अज्ञान और गरीबी के कारण धार्मिक तथा आर्थिक शोषण को चुपचाप सहन करते हैं। मटियानीजी ने विभिन्न आंचलों के जन-जीवन की गतिविधियों पर अपनी पैनी दृष्टि डालकर अपने गहन अनुभव के द्वारा अपना जीवन-दर्शन व्यक्त किया हैं। जो

वास्तवता को एक छेद देना चाहता हैं।

समग्र रूप में शैलेश मटियानीजी ने निम्नवर्ग का सामाजिक पक्ष हमारे सम्मुख पूरी सुझबुझ के साथ रखा हैं। अध्ययन के पश्चात यह बात पूर्णतः ज्ञात हो चुकी हैं कि सामाजिक मान्यताओं को तोडने की क्षमता निम्नवर्ग में नही हैं। उसके आर्थिक पक्ष को लेकर, अर्थार्जन यही एकमेव उद्देश्य, निम्नवर्ग का किस प्रकार बना हुआ है इसका यथार्थ वर्णन लेखक ने किया हैं। पैसा चरितार्थ का साधन है, लेकिन यही निम्नवर्ग का सम्बल बन गया है जिसे पाने के लिये वह अपना ईमान, शील और जमीर तक उसके बदले में देने के लिये तैय्यार रहता हैं। शहरी जीवन का परिणाम इंद्रियवशतः के रूप में निम्नवर्गीय लोग अपना रहे हैं। जिसके कारण परम्परागत संस्कृति लोप हो रही हैं। इंद्रियपरायणता के कारण भौतिकता को बड़ी मात्रा में प्राधान्य दिया जा रहा है। जिसके कारण जीवन जीने की प्रणाली तथा पद्धति में परिवर्तन आ रहा है। निम्नवर्ग की धार्मिकता कर्मकाण्डों में निहीत है, अशिक्षा, अंधश्रद्धा आदि के दुष्परिणाम निम्नवर्ग में स्पष्ट दिखाई देते हैं। दार्शनिकता की दृष्टि से कोई ठोस निर्णय दिखाई नहीं देते। जीवन की ओर देखने का एक नया ढंग शैलेश मटियानीजी ने अपनी कृतियों में रेखांकित किया है। प्रायः मानवता की दृष्टि से मनुष्य को देखना और परखना चहिये इस प्रकार का आग्रह मात्र वे करते हैं।

निम्नवर्ग यूँ तो आर्थिक दृष्टि से पूर्णतः हारा हुआ हैं। आर्थिक विपन्नता के कारण वह हर स्तर पर एक समझौता कर लेता हैं। इस समझौते में वह अपना व्यक्तित्व, अपना मूलभूत अधिकार तक खो देता हैं। इसी आर्थिक अभावत्मकता के कारण उसमें सामाजिक, सांस्कृतिक आदि मान्यताएँ विगलित हो ज रही हैं। अज्ञान के कारण वह अपनी बुद्धि की कसौटी पर किसी भी बात को परख लेने में सक्षम नहीं हैं। जिसके कारण परम्पराएँ तथा रूढियों की जँजिरों में वह इसतरह जकडा हुआ हैं कि उसे तोडने की उसमें तनिक भी इच्छा नहीं है। उल्टे वह उसमें और अधिक बन्धकर रहना चाहता हैं। यह कहा जा सकता हैं कि स्थिति में परिवर्तन शिक्षा के प्रसार तथा आर्थिक परिस्थिती में सुधार करके ही आ सकता है। आंचलों के आर्थिक जीवन के चित्रण के प्रसंग में सामन्तवादी और पूँजीवादी शोषण को जहाँ निम्नवर्ग का एक ओर अभिशाप सिद्ध किया है, वहाँ दूसरी ओर शिक्षा प्रणाली तथा आर्थिक सुधार आदि को उनसे मुक्ति के उपायों के रूप में इंगित किया है। यह बात 'चौथी मुठ्ठी' के मोतिमा द्वारा वेश्या होते हुए भी अपने बच्चों को स्कूल भेजना तथा 'दो बूँद जल' की रेशमा का हरेंदर को खूब पढ़कर अफसर बनने की कामना करना आदि से उपर्युक्त विचार सहज स्पष्ट होता है। निम्नवर्गीय नारी को अपने उपन्यासो में प्रमुखतः देते हुए उसमें विद्रोह के संकेत भी व्यक्त किये हुए हैं। नटवरसिंह के द्वारा गांधीवादी विचार दर्शन की व्यवहारिक परिस्थिती दृष्टिगत होती है।

अर्थाभाव जन्य समस्याओं, अनमेल विवाह, पराधिनता, पारवारिक कटुता का वर्णन करते हुए नारी जीवन को आत्मनिर्भरता का दृष्टिकोण प्रदान किया है। जब तक नारी आत्मनिर्भर नही होगी तब तक उसे इस बेबसी विवशता भरी हुई जिंदगी से मुक्ति नही मिलेगी जो शिक्षा एवं अर्थ निर्भरता के बिना असम्भव है। अन्त में केवल इतना ही कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य में शैलेश मटियानीजी के उपन्यासों का भविष्य उज्वल हैं।